

न्यू इंडिया है गांधी के सपनों का भारत

- डॉ. पंकज चौबे

महात्मा गांधी ने स्वच्छता और स्वावलम्बन का जो स्वप्न देखा था वह स्वतंत्रता के सात दशक बाद भी होना बाकी है। ऐसे में वर्तमान प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी द्वारा किये गये न्यू इंडिया का आह्वान की उपयोगिता स्वतः स्पष्ट है। न्यू इंडिया से मतलब पहले से उपस्थित भारत को हटा कर उसकी जगह किसी अन्य की प्रतिष्ठा का आशय नहीं है। वास्तव में प्रधानमंत्री ने जिस समय नयेपन का आह्वान किया है वह सदियों-सदियों से निरंतर उपस्थित है। भारत पर समय के साथ जमी धूल को हटाने का आह्वान है। साथ ही इसमें भारत के प्रत्येक नजरिये के लिए उसके उत्तरदायित्व के प्रति सजग होने का आह्वान भी है। जिसके प्रति वह समय बीतने के साथ उदासीन-सा हो गया है। इस दृष्टिकोण से देखे तो न्यू इंडिया एक नये आविष्कार से अधिक पूरातन और प्रासंगिक हिन्दुस्तान का पुनरूद्धार ही है।

प्रधानमंत्री 2022 तक भारत को न्यू इंडिया के तौर पर देखना चाहते हैं। वे कहते हैं- “2022 में भारत की आजादी के 75 साल होंगे और 2022 के भारत के सपनों को पूरा करने के लिए एक आंदोलन करना है।” सबसे पहले हम बात करेंगे कि स्वच्छ समाज की। राष्ट्रपिता महात्मा गांधी के जयंती 2 अक्टूबर 2014 को स्वच्छ भारत अभियान की शुरुआत की गई। स्वच्छ भारत अभियान की अवधारणा के अनुसार शौचालय, कचरा, प्रबंधन गांवों की सफाई एवं प्रचुर मात्रा में पेयजल सुविधा सुलभ होनी चाहिए। महात्मा गांधी की 150वीं जयंती, यानी 2019 तक भारत को वास्तविक रूप प्रदान करने के लिए एक विस्तृत कार्य योजना भी तैयार की जा रही है। महात्मा गांधी के सपनों के भारत में स्वच्छ भारत की कल्पना थी। जिसमें चारों तरफ स्वच्छता हो, ताजगी हो। गांधी ने अपने समय में गांवों की संबंध में जो बात कही वह गौर करने लायक है- “श्रम और बुद्धि के बीच अलगाव हो गया है। उसके कारण हम अपने गांवों के प्रति इतने लापरवाह हो गये हैं कि वह एक गुनाह ही माना जा सकता है। नतीजा यह हुआ है कि देश में जगह-जगह सुहावने और मनभावने छोटे-छोटे गांव के बदले हमें धूरे जैसे गंदे गांव देखने को मिलते हैं।”

आजादी के सात दशक बाद भी हम अपने गांव को स्वच्छ और स्वस्थ नहीं बना पाए हैं। न्यू इंडिया की संकल्पना में गांव प्राथमिक स्तर पर शामिल हैं। यह हर सभव प्रयास किया जा रहा है कि गांव स्वस्थ और स्वच्छ बने। इस

कार्य को करने के लिए सरकार ने एक जनआंदोलन छेड़ा है। लोगों की सहभागिता के साथ-साथ सरकार भी गांधी के सपनों को पूरा करने में लगी हुई है। सफाई जैसे कार्यक्रमों से गांव और शहरों का कायाकल्प होने लगा है। आज हर भारतीय को सफाई संस्कार विकसित करने की आवश्यकता है। गांधी कहते हैं- 'ग्राम उद्धार में सफाई अगर न आवेए तो हमारे गांव कचरे के धूरे जैसे ही रहेंगे। ग्राम-सफाई का सवाल प्रजा के जीवन का अविभाज्य अंग है। यह प्रश्न जितना आवश्यक है उतना ही कठिन भी है। दीर्घकाल से जिस अस्वच्छता की आदत हमें पड़ गई है उसे दूर करने के लिए महान पराक्रम की आवश्यकता है। जो सेवक ग्राम सफाई का शास्त्र नहीं जानताए खुद भंगी का काम नहीं करताए वह ग्राम सेवक के लायक नहीं बन सकता।' गांव की चिंता के साथ-साथ गांधी शहरों के गंदगी भी चिंतित थे। उन्होंने शहरों की सफाई के संदर्भ में कहा है- 'पश्चिम से हम एक चीज जरूर सीख सकते हैं और हमें सीखनी चाहिए- वह है शहरों की सफाई का शास्त्र। पश्चिम के लोगों ने सामुदायिक आरोग्य और सफाई का एक शास्त्र ही तैयार कर लिया है। जिससे हमें बहुत कुछ सीखना है। बेशकए सफाई की पश्चिम की पद्धति को हम अपनी आवश्यकताओं के अनुसार बदल सकते हैं।' हमें आज भी गांधी के इस कथन को आत्मसात करने की आवश्यकता है। हमें सामाजिक सफाई शास्त्र विकसित करने की जरूरत है। जिसमें सामुहिक रूप से लोग गांवों और शहरों की सफाई में अपने को लगायें। इससे समाज में गैर बराबरी, ऊंच-नीच जाति प्रथा का अंत होगा। सामुहिकता की भावना विकसित होगी। आज हम जिस न्यू इंडिया की बात कर रहे हैं। उसमें इन विषयों को प्रमुखता से शामिल किया गया है। जिसका असर समाज पर स्पष्ट दिखाई देता है। प्रत्येक व्यक्ति के हाथ में झाड़ू हैं भले ही यह प्रतिकात्मक लगे लेकिन इसने हाशिये के समाज के प्रति हमारे उस भावना को समाप्त किया है जिसमें अछूत जैसे शब्दों को हमने अपना लिया था। श्रम और बुद्धि का जो विलगाव हो रहा था। अब धीरे-धीरे लोगों में यह भाव समाप्त हो रहा है। गांधी कहते हैं- 'भागवान के प्रेम के बाद महत्व के दृष्टि से दूसरा स्थान स्वच्छता के प्रेम का ही है। जिस तरह हमारा मन मलिन हो तो भागवान का प्रेम संपादित नहीं कर सकते उसी तरह हमारा शरीर मलिन हो तो हम उसका आशीर्वाद नहीं पा सकते।'

जिस न्यू इंडिया की हम बात कर रहे हैं वह आज के दौर में पुनर्जागरण जैसा है। स्वस्थ समाज निर्माण के लिए नागरिकों का स्वस्थ होना आवश्यक है। जब हम स्वस्थ होंगे तभी स्वस्थ देश बनेगा। न्यू इंडिया विजन के तहत सरकार ने सम्पूर्ण स्वास्थ्य का लिए अभियान चला रखा है। इसमें बच्चों के सम्पूर्ण टीकाकरण का अभियान व बुजुर्गों के स्वास्थ्य की देखभाल शामिल है। कोई भी बच्चा कुपोषण से ना मरे इसके लिए व्यापक स्तर पर

योजनाएं चल रही हैं। बीमार लोगों को सस्ती से सस्ती दवाएं उपलब्ध करायीं जा रही हैं। परंपरागत चिकित्सा पद्धति को बढ़ावा दिया जा रहा है। सरकार अपने डॉक्टरों को गांव में चिकित्सा सेवा देने के लिए प्रोत्साहित कर रही है। गांवों के स्वास्थ्य सेवा के विषय में गांधी कहते हैं- 'मैं यह जानना चाहूंगा कि ये डॉक्टर और वैज्ञानिक लोग देश के लिए क्या कर रहे हैं ? वे हमेशा खास-खास बीमारियों के इलाज के नये-नये तरीके सीखने के लिए विदेशों में जाने के लिए तैयार दिखाई देते हैं। मेरी सलाह है कि वे हिन्दुस्तान के लाखों गांवों की तरफ ध्यान दें। ऐसा करने पर उन्हें जल्दी ही मालूम हो जाएगा कि डॉक्टरी की डिग्रियां लिए हुए सारे मर्द और औरतों की, पश्चिमी नहीं बल्कि पूर्वी ढंग पर ग्राम सेवा के काम में जरूरत हैं।' हर तरह से आज सरकार नई चिकित्सा पद्धति के साथ-साथ परंपरागत चिकित्सा पद्धति को अपनाने पर जोर दे रही हैं। आहार के संतुलन का भी ख्याल रखा जा रहा है। लोगों को शरीर की आवश्यकता के अनुसार उनको आहार प्राप्त हो सके। आहार के संबंध में गांधी का मानना है कि- 'जो आदमी जीने की लिए खाता है। जो पांच महाभूतों यानी मिट्टी, पानी, आकाश, सूरज और हवा का दोस्त बन कर रहता है। जो उनको बनाने वाले ईश्वर का दास बनकर जीता है। वह कभी बीमार नहीं पड़ेगा।' गांधी स्वयं आहार को लेकर बेहद सजग थे। आगे वे कहते हैं- 'अगर चावल पुरानी पद्धति से गांवों में ही कूटा जाए तो उसकी मजदूरी हाथ कूटाई करने वाली बहनों के हाथ में जाएगी और चावल खाने वाले लाखों लोगों को जिन्हें आज मिलों को पालिश किये हुए चावल से केवल स्टार्च मिलता है। हाथ कूटे चावल से कुछ पोषक तत्व भी मिलेंगे।' यहां गांधी आरोग्य के साथ-साथ हजारों हाथों को काम मिलने की बात करते हैं। आरोग्य के शास्त्र के साथ-साथ स्वावलम्बन की बात भी ध्यान रखने योग्य हैं। गांधी कहते हैं- 'रोगी प्रजा के लिए स्वराज्य प्राप्त करना मैं असंभव मानता हूं। इसलिए हमलोग आरोग्य-शास्त्र की जो अवगणना करते हैं वह दूर होनी चाहिए।' न्यू इंडिया में सम्पूर्ण स्वास्थ्य की बात प्रमुख है।

न्यू इंडिया में शिक्षा और कौशल का विकास सबसे महत्वपूर्ण पहलू है। शिक्षा की हमारी अबतक की पद्धति एकांगी रही है। इस पद्धति से हमने युवाओं को सिर्फ अक्षर ज्ञान दिया है। उनके हाथों को हुनरमंद नहीं बनाया है। आज भारत में 35 वर्ष से कम आयु के 65 प्रतिशत युवाओं की संख्या है। इनमें कौशल विकास की बात करें तो सिर्फ 2 प्रतिशत के पास ही अपनी कोई स्किल है। शिक्षा की आवश्यकता सिर्फ अक्षर ज्ञान आधारित डिग्री हासिल करना नहीं है बल्कि रोजगार परक होना चाहिए। बच्चों को पढ़ाई के साथ-साथ उनके हाथों को हुनरमंद बनाना जरूरी है। गांधी इस तरह की शिक्षा पद्धति के बड़े समर्थक थे। गांधी का मानना था कि उन्होंने अपनी

स्वेच्छा से खादी धारण करना स्वीकार कर लिया। दरअसल खादी का अपना एक अर्थशास्त्र है। स्वावलंबन और स्वदेशी की मजबूत भावना इसके साथ जुड़ी हुई है। बाद के दिनों में खादी और चरखा आजादी का प्रतीक बन गया। गांधीजी कहते हैं- 'मैं जितनी बार चरखे पर सूत निकालता हूँ उतनी ही बार भारत के गरीबों का विचार करता हूँ।' गांधी ने खादी और चरखों के साथ अंतिम जन को जोड़ा। गांधी इसके आर्थिक पहलू से भी वाकिफ थे। गांधीजी कहते हैं- 'मेरा पक्का विश्वास है कि हाथ-कताई और हाथ-बुनाई के पुनरुज्जीवन से भारत के आर्थिक और नैतिक पुनरुद्धार में सबसे बड़ी मदद मिलेगी। आजादी की लड़ाई में खादी के प्रति लोगों की भावना ऐसी जुड़ी कि वह आजादी का पोषाक बन गया।

आज हमारी शिक्षा हस्तशिल्प या उत्पादक कार्य पर केन्द्रित हो। अन्य सभी योग्यताओं का विकास जहां तक संभव होए बच्चों के पर्यावरण को ध्यान में रखते हुए बालक द्वारा चुनी हुई हस्तकला से संबंधित हो। महात्मा गांधी इस शिक्षा पद्धति को सामाजिक परिवर्तन के साथ-साथ समाज के नव निर्माण का सबसे प्रमुख आधार मानते थे। नयी तालीम का विचार न सिर्फ भारत के संदर्भ में प्रासंगिक रहा बल्कि दुनिया को भाईचारे शांति और मानव समाज के कल्याण के लिए आवश्यक रहा। गांधी की शिक्षा पद्धति में आध्यात्मिकता, नैतिकता सत्य निष्ठा का समावेश था। गांधीजी बच्चों को स्वालम्बी बनाने की व्यवस्था चाहते थे। एक ऐसी व्यवस्था बने जिसमें सभी स्तर पर स्वावलम्बन हो।

आज आबादी बढ़ती जा रही है और बेरोजगारी का स्तर भी उसी अनुपात में बढ़ती जा रही है। जिस व्यवस्था को हमने अपनाया है इस व्यवस्था में सभी के लिए रोजगार सृजन की क्षमता नहीं थी। दरअसल शिक्षित युवाओं को काम नहीं मिल पा रहा है। इसकी वजह तलाशने पर समझ आता है कि अक्षर ज्ञान में तो हमारे युवा शिक्षित हैं पर हाथों में कौशल का ज्ञान नहीं। गांधीजी कहते हैं- 'उद्योग, हुनर, तन्दुरुस्ती और शिक्षा इन चारों का सुंदर समन्वय करना चाहिए। नई तालीम में उद्योग और शिक्षा तन्दुरुस्ती और हुनर का सुंदर समन्वय है। इन सबके मेल से मां के पेट में आने के समय से लेकर बुढ़ापे तक का एक खूबसूरत फूल तैयार होता है। यही नई तालीम है। इसलिए मैं शुरू में ग्राम-रचना के टुकड़े नहीं करूंगा बल्कि यह कोशिश करूंगा कि इन चारों का आपस में मेल बैठे। इसलिए मैं किसी उद्योग और शिक्षा को अलग नहीं मानूंगा बल्कि उद्योग को शिक्षा का जरिया मानूंगा और इसीलिए ऐसी योजना में नई तालीम को शामिल करूंगा।' ये था गांधी का सपना। जिसे आज हम पूरा करने को तत्पर्य है। दरअसल यही है न्यू इंडिया का मूल आधार है। आज ऐसे कॉलेज और विद्यालय खोले

जा रहे हैं जिसमें कौशल पर अधिक जोर दिया जा रहा है।

हमारे माननीय प्रधानमंत्री महोदय ने कहा कि "रोजगार से जुड़ी योजनाओं में ट्रेनिंग के तरीके में 21वीं सदी की आवश्यकताओं के अनुसार मानव संसाधन के विकास के लिए भारत सरकार ने उनके नई योजनाएं हाथ में ली है।" राष्ट्रीय कौशल विकास मिशन के तहत देश में दक्ष एवं कुशल श्रमशक्ति की कमी को देखते हुए प्रधानमंत्री ने 15 जुलाई 2015 को पहले विश्व युवा कौशल दिवस के अवसर पर इस मिशन का उद्घाटन किया। इस योजना के तहत वर्ष 2022 तक 40 करोड़ युवाओं को प्रशिक्षित करने का लक्ष्य है। प्रधानमंत्री कहते हैं-"अगर कोई हैंडीक्राफ्ट बनाने वाले को कोई नई टेक्नोलॉजी के साथ ग्लोबल आवश्यकता के अनुसार उस हैंडीक्राफ्ट को आधुनिक समय में मॉडिफाई करने के लिए उसको सिखाना है क्या? अगर वे ट्रेनिंग भी साथ-साथ करता है तो हम हमारे सामान्य गरीब व्यक्ति को जो हैंडीक्राफ्ट के क्षेत्र में काम करता है, उसका एक प्रकार से वोकेशनल ट्रेनिंग कहो। स्किल ट्रेनिंग हो, टेक्नोलॉजिकल ट्रेनिंग कहो। उसको मार्केट की समझ कैसी है। उसको समझाया तो वो थोड़ा बढ़ाकर देता है।" आज यह शिक्षा पद्धति न सिर्फ युवाओं को स्वावलम्बी बना रहा है बल्कि देश को मजबूत करने का काम करेगा। समस्त समाज की स्थापना होगी।

हम आज ऐसी कोशिश कर रहे हैं जहां गांव में स्वरोजगार की संभावना बढ़ेगी वही कौशल के आधार पर हम शहर के साथ-साथ गांवों में भी रोजगार सृजन करेंगे। इससे पलायन की समस्या कम हो सकेगी। गांव का संदर्भ स्वरूप बना रहेगा। शहर अतिरिक्त बोझ से बच जाएगा। सरकार ऐसी व्यवस्था कर रही है जिसमें लोगों का कौशल बढ़े और उन्हें घर के आसपास ही सम्मानजनक रोजगार मिल सकेगा। हम पलायन की पीड़ा से बच सकेंगे। न्यू इंडिया गांधी के सपनों को साकारात्मक रूप देने का प्रयास है। सही मायने में न्यू इंडिया गांधी के स्वप्न को सच करता है।

गांधी के सपनों का भारत है। साकारात्मक तरीके से हमें न्यू इंडिया को साकार करने की आवश्यकता है। यही इसमें जनभागीदारी जितनी बढ़ेगी उतनी ही इसका साकारात्मक प्रभाव देखने को मिलेगा। हमारे पूरखे महात्मा गांधी ने इस देश को लेकर जो स्वप्न देखा था। आज व्यवहार रूप में लाने की आवश्यकता है। हमारी सरकार उस दिशा में निरंतर बढ़ रही है। आज जरूरत है विचार को व्यवहार रूप में उतारने की।